अध्याय – 15

वानिकी विस्तार

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् के वानिकी विस्तार कार्यक्रम, प्रौद्योगिकी के हस्तान्तरण द्वारा अन्त्य उपभोक्ताओं साथ अनुसंधाान संस्थानों को जोड़ने; राज्य वन विभागों, गैर सरकारी संगठनों आदि को विस्तार सहायता; विभिन्न संगठनों के साथ अनुसंधान सहयोग और उपभोक्ता समूहों के साथ सहक्रियात्मक संयोजन की स्थापना में अहम् भूमिका अदा करते हैं। वानिकी विस्तार के तहत कार्यकलाप मुख्यतया वनों की भूमिका, उनके संरक्षण, विकास, सामुदायिक भूमि, सार्वजनिक वनों के प्रबन्धन, वन उत्पादकता बढ़ाने की आवश्यकता तथा वन उत्पादों के वैज्ञानिक उपयोग के संबन्ध में लोगों को प्रेरित एवं शिक्षित करने पर केन्द्रित हैं। भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् ने एक पूर्ण विकसित विस्तार निदेशालय की स्थापना करके वानिकी विस्तार को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है। भा.वा.अ.शि.प. विस्तार सेवाओं के उपभोक्ताओं में मुख्यत: राज्य वन विभाग, वन निगम, वन उद्योग, किसान, गैर-सरकारी संगठन तथा अन्य शामिल हैं।

वानिकी विस्तार एक दोहरी प्रक्रिया है: जहाँ एक ओर परीक्षित प्रौद्योगिकियों और वैज्ञानिक सूचनाओं को उपभोक्ताओं में हस्तान्तरित करना है और वहीं दूसरी ओर अनुसंधाान प्राथमिकतायें विकसित करने तथा अनुसंधान कर्ताओं को क्षेत्र वास्तविकताओं के साथ-साथ रखने के लिए उपभोक्ताओं की आवश्यकताओं का पता लगाना है। विस्तार निदेशालय की तीन महत्वपूर्ण शाखाएं हैं। विस्तार शाखा, जो पहचान किए गए उपभोक्ताओं, जिनमें मुख्यत: भा.वा.अ.शि.प. की वानिकी प्रौद्योगिकियों अथवा पारंपरिक प्रौद्योगिकियों के उपयोग में सम्मिलित काष्ठीय उत्पादों के निर्माणकर्ता, लघु पैमाने के उद्यमी शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों के, इच्छुक भावी उद्यमी एवं संगठन भी हैं, में प्रौद्योगिकियों का विस्तार करती हैं।

पुस्तकालय शाखा वानिकी तथा सम्बद्ध विषयों पर अनेक पुस्तकें एवं पत्रिकायें उपयोग करने की सुविधायें उपलब्ध कराती हैं। इस समय इसके आधुनिकीकरण पर जोर दिया गया है ताकि इसे अद्यतन एवं उपभोक्ताओं के अनुकूल बनाया जा सके और अन्य पुस्तकालयों तथा दूर दराज के उपयोगकर्ताओं से जोड़ा जा सके।

इसकी तीसरी शाखा प्रकाशन है जो मोनोग्राफ एवं पुस्तकों सहित सभी लिखित अनुसंधाान निष्कर्षों तथा रिपोटों को प्रकाशित करने के लिए उत्तरदायी हैं। यह इसके द्वारा नियमित रूप से प्रकाशित की जा रही विभिन्न पुस्तिकाओं एवं पैम्फलेटों को इच्छुक उपयोगकर्ताओं को उपलब्ध भी कराती है।

विस्तार के लिए प्रौद्योगिकियों की पहचान एवं प्राथमिकतायें निर्धारित करना ।

अनुसंधाान परिणामों के प्रसार, प्रौद्योगिकी के हस्तान्तरण और प्रौद्योगिकी की उपलब्धता की प्रक्रिया पर निर्भर करते हैं, जो क्षेत्र में विद्यमान प्रौद्योगिकी में सुधाार ला सकते हैं। हाल के वर्षों में भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् ने 33 परीक्षित प्रौद्योगिकियों की पहचान की जिसमें से 17 परिक्षित प्रौद्योगिकियों को विस्तार के लिए ग्राहकों की मांग के आधाार पर प्राथमिकीकृत किया गया।

विस्तार कार्यविधि

वर्तमान में अपनाई गई विस्तार कार्यविधियों में है: क्षेत्र में प्रदर्शन द्वारा; फिल्मों, वीडियों, पुस्तिकाओं, छोटे-छोटे पैम्फलेटों जैसी विस्तार सामग्रियों एवं प्रदर्शनों द्वारा; कार्यशालाओं, गोष्ठियों एवं सम्मेलनों द्वारा तथा व्यक्तिगत सम्पर्क द्वारा। कार्यविधि की पसन्द, प्रौद्योगिकी एवं ग्राहक समूह की पसन्द पर निर्भर करती हैं।

क्षेत्र में प्रौद्योगिकी का प्रसार

भावी ग्राहकों में प्रौद्योगिकी का प्रदर्शन सबसे प्रभावी विस्तार विधियों में एक है। जैसा कि विश्व बैंक परियोजना में दिया गया है "विस्तार सहायता निधि" तथा "उद्योग प्रौद्योगिकी प्रदर्शन निधि" के अन्तर्गत यह किया जा रहा है।

विस्तार सहायता निधि के अन्तर्गत परियोजना

वानिकी अनुसंधाान, शिक्षा एवं विस्तार परियोजना अनुसंधान/विस्तार सहानुबंध के सुधार के लिए सहायता उपलब्ध कराती हैं। यह क्षेत्र में अनुसंधान परिणामों के प्रदर्शन में सहायता करके साथ-साथ हासिल किया जाता है जिसके लिए परियोजना उपयोगकर्ता एजेन्सियों, जैसे - राज्य वन विभागों, राज्य वन निगमों, गैर - सरकारी संगठनों, विश्वविद्यालयों तथा अन्य सम्भाव्य विस्तार एजेन्सियों में परीक्षित प्रौद्योगिकियों का विस्तार करने के लिए धन उपलब्ध कराती हैं। राज्य वन विभागों, विश्वविद्यालयों तथा अन्य संगठनों द्वारा विकसित परीक्षित प्रौद्यौगिकियों के लिए भी विस्तार सहायता निधि उपलब्ध है। वर्ष 1997-98 के दौरान विस्तार सहायता निधि के अन्तर्गत विश्व बैंक मिशन सहमति के अनुसार सतत् आधार पर प्रस्ताव मांगे गये। वर्ष के दौरान 60 से भी अधिक प्रस्ताव प्राप्त हुए जिनमें से 12 प्रस्तावों को विस्तार अनुदान समिति, जिसकी वर्ष में दो बार बैठक होती है, द्वारा निधियन के लिए उपयुक्त पाया गया। 11 (ग्यारह) मिलियन के इन प्रस्तावों को मंजूरी दी गई तथा धन उपलब्ध कराने की प्रकिया चल रही है। सभी जारी परियोजनाओं की नियमित जाँच भी की गई।

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् द्वारा विकसित परीक्षित प्रौद्योगिकियों के बारे में ग्राहकों को जानकारी देने के लिए उद्योग तकनीकी प्रदर्शन निधि का उपयोग करके नियमित प्रदर्शन कार्यशालायें आयोजित की जाती हैं। 1997-98 में, काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बंगलौर द्वारा विकसित "कैटामरैन बिल्डिंग" पर परीक्षित प्रौद्योगिकियों के लिए प्रदर्शन कार्यशालाएं आयोजित की गई तथा आन्ध्र प्रदेश और तमिलनाडु के मछुवारों में इनका प्रदर्शन किया गया। उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान की क्लोनीय प्रवर्धन, बांस प्रवर्धन तथा अन्य प्रौद्योगिकियों को किसान मेलों सहित अलग-अलग तरीकों से अनेक उपयोगकर्ताओं के लिए प्रदर्शित किया गया। वन अनुसंधान संस्थान की विभिन्न प्रौद्योगिकियों, जैसे - यूकेलिप्टस का रूपान्तरण, यूकेलिप्टस की चिराई और संशोषण, काष्ठ के बंकन, पेन्सिल निर्माण, यूकेलिप्टस का परिरक्षक उपचार, पुनरउपयोज्य पैंकिंग डब्बे, काष्ठ की रँगाई, वन अपशिष्ट से रंजक और अगरबत्ती विकल्प आदि, का विभिन्न नए और पुराने उद्यमियों, अनेक विस्तार एजेन्सियों और गैर - सरकारी संगठनों में नियमित रूप से प्रदर्शन किया गया। इसके अलावा, नौ कागज मिलों से आए प्रतिनिधियों के समक्ष व0अ0सं0 की कागज एवं लुगदी प्रौद्योगिकी तथा गुड़गाँव, सोनीपत, हापुड़, चंडीगढ़, लुधियाना, जलंधर, कानपुर, यमुनानगर, परवानू, राम नगर, नई दिल्ली, जम्मू, हरिद्वार और देहरादून से आंए प्लाईकाष्ठ निर्माताओं के सम्मुख प्लाई काष्ठ प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन किया गया।

उद्योग प्रौद्योगिकी प्रदर्शन के अन्तर्गत उद्योगों के साथ संयुक्त उपक्रम:

"यूकेलिप्टस काष्ठ से दियासलाई निर्माण" पर 1995-96 में स्वीकृत एक संयुक्त उपक्रम चल रहा है।

प्रशिक्षण, संगोष्ठियां, सम्मेलन, व्यक्तिगत सम्पर्क

पुस्तक मेला

1997-98 के दौरान भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् ने अनेक स्थानीय पुस्तक मेलों का आयोजन करने एवं भाग लेने के अलावा दिल्ली में आयोजित एक अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक मेले में भाग लिया।

कार्यशाला का आयोजन

वर्ष के दौरान चन्दन पर एक अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठी तथा "पौधशालाओं के विकास" एवं "वानिकी अनुसंधान तथा वानिकी पद्धतियों के बीच सहानुबंध" विषय पर दो कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। अधिकांश प्रदर्शन कार्यशालाओं, किसान मेलों में भाग लेने और अन्य विस्तार प्रयासों का उद्देश्य उपयोगकर्ताओं के साथ सीधे व्यक्तिगत सम्पर्क करना है। इसके फलस्वरूप तमिलनाडु और आन्ध्र प्रदेश के उपयोगकर्ता मछुवारों एवं मछली विभागों, राज्य वन विभागों तथा किसानों के साथ गैर - सरकारी संगठनों एवं पूरे देश के उद्योगों के साथ विस्तार सहानुबन्धों के विकास में सहायता मिली।

विस्तार सामग्री का निर्माण

फिल्म निर्माण

सन्देशों के प्रसार के लिए इलेक्ट्रानिक मीडिया एक महत्वपूर्ण माध्यम है। फिल्म निर्माण पर विशेष जोर दिया गया है। वर्ष के दौरान भा.वा.अ.शि.प. ने 'नीम: द ग्रीन गोल्ड' नाम से एक फिल्म का निर्माण किया।

निम्न फिल्में और विभिन्न टी०वी० स्पॉट, जिन्हें मुख्यत: 1997-98 के दौरान शुरू किया गया है, निर्माण की विभिन्न अवस्थाओं में हैं:

1. भारत में कृषिवानिकी
2. अकाष्ठ वन उत्पाद और 3 टी०वी० स्पॉट्स
3. यूकेलिप्टस के उपयोग - 3 भाग और 6 टी०वी० स्पॉट्स
4. भा.वा.अ.शि.प. की विस्तार रणनीतियां
5. मध्य भारत में बांस - 2 भाग और एक टी०वी० स्पॉट
6. गरीब मछुवारों के लिए उपचारित कैटामरैन और 2 टी०वी० स्पॉट्स
7. कैज्वारिन्ना का आर्थिक उपयोग तथा एक टी०वी० स्पॉट

विस्तार साहित्य

1. भा.वा.अ.शि.प. वार्षिक रिपोर्ट: अंग्रेजी और हिन्दी
2. पुस्तिकायें
    1. लैमिनेटेड वेनीयर लम्बर फ्रॉम पॉपलर फॉर डोर/विन्डो शटर्स।
    2. वेनीयर बाक्सेज - ए टूल टू वुड सेविंग इन पैकेजिंग
    3. फॉरेस्ट्री टूल्स एण्ड मशीन्स
    4. फॉरेस्ट ट्री सीड लैबोरेट्री
    5. नर्सरी टेकनीक्स ऑफ आरनामेन्टल बैम्बूज
    6. टीक
    7. डोर/विन्डो शटर्स फ्राम लैमिनेटेड पॉपलर वुड

3. पैम्फलेट्स/फोल्डर्स

1. फैसिलिटिज फॉर रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग इन पल्प एण्ड पेपर सांइस एण्ड टैक्नोलोजी ऐट सैलूलोज एण्ड पेपर डिविजन, फॉरेस्ट रिसर्च इन्सटीट्यूट, देहरादून।
2. फॉरेस्ट प्रोडक्टस डिविजन इन द सर्विस ऑफ वुड बेस्ड इन्डस्ट्रीज
3. स्ट्रक्चरल टिम्बर फ्राम लॉप्स एण्ड टॉप्स ऑफ यूकेलिप्टस एण्ड पॉपलर।

4. पुस्तकें

1. एन्वायरमेन्टल मैनेजमैंट कन्सेप्टस, स्ट्रेटेजिज़ एण्ड लेजिसलेशन फॉर माइन एशीयाज़ (पी०सोनी, बीना चन्द्रा और एस०डी० शर्मा द्वारा)।
2. चेन्जिंग फेसीट्स ऑफ वेदर एण्ड क्लाइमेट ऑफ दून वैली (डा० लक्ष्मी रावत)
3. नीम - ए वन्डर ट्री (डा० वी०एन० गुप्ता तथा के०के० शर्मा द्वारा)
4. मैरीन वुड - इनफेस्टींग आर्गेनिज्म इन द डिस्ट्रक्शन ऑफ लिविंग मैंग्रोव वेजीटेशन एलांग गोवा कोस्ट (एल०एन० सान्ताकुमारन तथा सुरेखा जी० सावंत द्वारा)
5. फॉरेस्ट्री स्टेटिस्टिक्स, इंडिया 1988-94।

3. अन्य प्रकाशन

1. मैथोडोलॉजी फॉर सेटिंग रिसर्च प्रायोरिटीज फॉर आई०सी०एफ०आर०ई०।
2. वन अनुसंधाान पत्रिका, फरवरी 1998।
3. कन्सलटेन्सी रिपोर्ट्स, यू०एन०डी०पी०।
4. ए०एफ०आर०आई० न्यूजलैटर, वाल्यूम 3, न०2 जुलाई - दिसम्बर, 1995।
5. टिम्बर/बैम्बू ट्रेड वुलेटिन नं० 10, मार्च, 1997
6. टिम्बर/बैम्बू ट्रेड वुलेटिन नं० 11, जून, 1997
7. टिम्बर/बैम्बू ट्रेड वुलेटिन नं० 12, सितम्बर, 1997

निश्चित राष्ट्रीय लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए रणनीतियां

विश्व बैंक की वानिकी अनुसंधान, शिक्षा एवं विस्तार परियोजना के विस्तार घटक की सहायता से पिछले कुछ वर्षो के दौरान भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् अपनी परीक्षित प्रौद्योगिकियों, जो राष्ट्रीय वन नीति के अनुरूप हैं, का विस्तार करने में सक्षम रही है। रोपण में उगे किशोर प्रकाष्ठ, जैसे - यूकेलिप्टस,

पॉपलर, के बेहतर उपयोग और चिराई, संशोषण एवं परिरक्षक उपचार का उपयोग करके किशोर काष्ठ के जीवन को बढ़ाने जैसी प्रौद्योगिकियां काष्ठ की मांग को कम करती हैं और इसके द्वारा प्राकृतिक वनों पर दबाव कम होता है।

इसी तरह, बांस के बृहत प्रवर्धन, पुनरप्रयोज्य पैकिग डिब्बों, पॉपलर और पावलोनिया जैसी तेज वृद्धि करने वाली प्रजातियों से पेन्सिल के निर्माण जैसी अन्य प्रौद्योगिकियां न केवल उपर्युक्त उद्देश्यों को पूरा करती हैं, बल्कि वन उत्पादों, जिनकी अल्प आपूर्ति है, के विकल्पों को भी प्रोत्साहित करती हैं।

अब तक किए गए नियमित प्रयासों के साथ वर्ष के दौरान विभिन्न राज्य वन विभागों/संस्थानों/गैर - सरकारी संगठनों, जो भा.वा.अ.शि.प. की उपर्युक्त परीक्षित प्रौद्योगिकियों के विस्तार के लिए स्वेच्छा से आगे आए, के लिए विस्तार निदेशालय द्वारा उ०प्र०, तमिलनाडु, उड़ीसा, केरल और कर्नाटक राज्यों में फैली कुल नौ परियोजनाओं को स्वीकृति दी।

भा.वा.अ.शि.प. द्वारा अपनाई जा रही विभिन्न कार्यपद्धतियों को संस्थापक बनाने तथा लगातार सुधारने के साथ ही साथ एक पूर्ण विकसित स्व-वहनीय विस्तार निदेशालय सृजित करने के लिए योजनाएं तैयार की जा रही है। इनमें से कुछ का व्योरा नीचे दिया गया है:

मीड़िया सेन्टर का सृजन

विभिन्न उपयोक्ताओं एवं भावी उद्यमियों तथा आबादी के सम्बद्ध वर्गों को शिक्षित करने के लिए भा. वा.अ.शि.प. द्वारा विकसित विभिन्न प्रौद्योगिकियों एवं विस्तार कार्य पद्धतियों के साथ ही अन्यत्र विद्यमान प्रौद्योगिकियों के अन्तर्राष्ट्रीय मानक को वीडियो और फिल्मों के निर्माण हेतु परिषद् की अपनी क्षमताएं विकसित करने के लिए यहां एक पूर्ण सुसज्जित इलेक्ट्रानिक मीडिया सेन्टर सृजित करने का प्रस्ताव है। केन्द्र को विषय वस्तु हासिल करने से लेकर अन्तिम फिल्म निर्माण करने तक की सभी सुविधाओं के लिए इलेक्ट्रानिक गैजेट्स के साथ सुसज्जित करने का प्रस्ताव है। इसमें विभिन्न उपभोक्ताओं एवं आगन्तुकों को इन फिल्मों एवं वीडियो को नियमित रूप से दिखाने की सुविधा रहेगी। समाचारों और रेडियो द्वारा नियमित रूप से प्रचार एवं विस्तार करने की क्षमता विकसित करने का भी प्रस्ताव है।

उपग्रह प्रौद्योगिकी प्रदर्शन विस्तार केन्द्र

कुछ प्रसिद्ध तथा सुगठित संस्थानों की पहचान की गई है, जो भा.वा.अ.शि.प. के प्रौद्योगिकी प्रदर्शन उपग्रह केन्द्र बन सकते हैं। इनमें मुख्यत: या तो सरकारी संस्थान अथवा गैर-सरकारी प्रसिद्ध विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान शामिल हैं, जैसे - बिरला वैज्ञानिक अनुसंधान, रांची आदि, कोटद्वार में औद्योगिक उत्पादन इकाई और गढ़वाल मंडल विकास निगम और भीमताल में बिरलाज स्माल इन्डस्ट्री रिसर्च एण्ड डवलपमेंट

आर्गेनाइजेशन हैं। इन संस्थानों में महत्वपूर्ण काष्ठ आद्यारित परीक्षित प्रौद्योगिकियां पहले ही स्थापित की जा चुकी हैं तथा आशा है कि ये यथासमय नियमित आधाार पर सार्वजनिक प्रदर्शन के लिए उपलब्ध हो जायेंगी।

मीडिया पुस्तकालय - एवं सन्दर्भ केन्द्र

यह प्रस्ताव है कि विस्तार कार्यपद्धतियों में बढ़ते हुए अनुभाव तथा वानिकी प्रौद्योगिकियों की विस्तार कार्यपद्धतियों पर फिल्मों, वीडियो, किताबों आदि की उपलब्धता के साथ यथावधि मीडिया विंग एक पुस्तकालय सहित सन्दर्भ केन्द्र में विकसित होगा। तब यह प्रस्तावित मीडिया केन्द्र में इच्छुक उपयोगकर्ताओं एवं आगन्तुकों को जानकारी और सन्दर्भ के लिए उपलब्ध हो सकता है।

राष्ट्रीय वन पुस्तकालय एवं सूचना केन्द्र

राष्ट्रीय वन पुस्तकालय एवं सूचना केन्द्र की गतिविधियों को विद्यमान सूचना के भण्डार-घर से सक्रिय सूचना केन्द्र में परिवर्तित करने तथा उपयोगकर्ताओं के लिए ग्राहकीकृत सूचना उपलब्ध कराने की दिशा में केन्द्रित किया गया है।

पहले राष्ट्रीय वन पुस्तकालय एवं सूचना केन्द्र पुस्तकों, पत्रिकाओं तथा अन्य अभिलेखों के एक भण्डारघर के रूप में तथा पारंम्परिक पुस्तकालय के रूप में कार्य कर रहा था। उपयोगकर्ताओं को अभिलेख उपलब्ध कराना इसकी मुख्य सेवा थी। किन्तु अब राष्ट्रीय वन पुस्तकालय एवं सूचना केन्द्र एक गुंजायमान, व्यावसायिक रूप से व्यवस्थित पुस्तकालय एवं सूचना केन्द्र में परिवर्तित हो गया है। इसने अपने ग्राहकों के लिए सूचना सेवाएं देने और अभिलेखों के प्रकमण के विषय में आधुनिक विधियों/पद्धतियों का सूत्रपात किया है। व्यावसायिक क्रियाकलाप, यथा - प्रभावी संग्रहण विकास, ऑनलाइन लोक उपागमन सूचीपत्र उपलब्ध कराने के लिए पढनीय सूचीपत्र मशीन का सृजन, अभिलेखों की बारकोडिंग, भा.वा.अ.शि.प. संस्थानों के साथ अनुदर्शी खोज सेवा साझेदारी में सुधार, संचार सुविधाओं को सुधारना, इन्टरनेट पंहुच उपलब्ध कराना, मानव संसाधन विकास आदि, रा०व०पु०सू० केन्द्र में प्रयोक्तान्मुखी सुविधाओं की प्रगति में अहम भूमिका अदा कर रहे हैं।

संग्रहण विकास

1997-98 के दौरान, राष्ट्रीय वन पुस्तकालय एवं सूचना केन्द्र में रू० 93, 98, 110.00 लाख लागत की कुल 3709 नयी पुस्तकें जोड़ी गयी हैं। 1997-98 में राष्ट्रीय वन पुस्तकालय एवं सूचना केन्द्र ने 206 विदेशी पत्रिकायें और 37 भारतीय पत्रिकायें मंगाई।

नयी पुस्तकालय सेवायें

राष्ट्रीय वन पुस्तकालय एवं सूचना केन्द्र ने भा.वा.अ.शि.प. में वनविदों तथा वैज्ञानिकों और अपने संस्थानों के लिए वर्तमान जागरूकता सेवा और सूचना का चयनात्मक प्रसार शुरू किया है। संदर्भिक सेवाएं माँग पर

उपलब्ध कराई जाती हैं। अन्त: पुस्तकालय ऋण सेवा शुरू की गई है ताकि आपसी हित के लिए स्थानीय पुस्तकालयों की सुविधाओं का लाभ उठाया जा सके और हिस्सेदारी की जा सके।

बारकोड उत्पत्ति

पुस्तकों के वितरण (निर्गम/प्राप्ति) के स्वचलन तथा पुस्तकालय के स्टॉक के सत्यापन को सरल करने के लिए, राष्ट्रीय वन पुस्तकालय एवं सूचना केन्द्र में किताबों की बारकोडिंग शुरू की गई है। विवरणाधीन अवधि में स्टॉक में करीब 12,000 पुस्तकों को बारकोड किया गया।

1997-98 में उपलब्ध सी डी - रोम डाटाबेसेज

क्र०सं०	शीर्षक	विस्तार
1.	बायोलॉजिकल एवस्ट्रेक्टस	1985-वर्तमान
2.	कैमिकल एवस्ट्रेक्ट्स	1996
3.	साइंस साइटेशन इन्डेक्स	1991-95
4.	एग्रिस	1993-1996
5.	इको - डिस्क	1990-1996
6.	ट्री - सी०डी०	1993-वर्तमान
7.	कैब एबस्ट्रेक्ट्स	1982-1995

प्राप्त किए गए सी डी - रोम डाटाबेस राष्ट्रीय वन पुस्तकालय एवं सूचना केन्द्र के उपयोगकर्ताओं तथा भा०वा०अ०शि०प० संस्थानों को उपलब्ध कराए गए। भा०वा०अ०शि०प० के छ: संस्थानों में उपलब्ध वी - सैट की मद्द से देहरादून के बाहर दूरवर्ती लॉगिन सुविधा के रूप में डाटाबेस उपलब्ध हैं।

नेटवर्क विकास एवं प्रबन्धन

भा०वा०अ०शि०प०/व०अ०स० में स्थानीय क्षेत्र नेटवर्क

स्थानीय क्षेत्र नेटवर्क लगाने के लिए मैसर्स सी०एम०सी० लिमिटेड को आदेश दिया गया। एक उच्च गति 100 mbps स्विचदार ईथरनेट फाइबर ऑप्टिक बैकबोन का प्रस्ताव है। आधार स्विच को उच्च गति योजकों द्वारा अलग-अलग भवनों में पहुंच स्विचों से जोड़ा जाएगा। बदले में पहुंच स्विचों को पूर्तिकर्ता एवं कार्य केन्द्र से जोड़ा जाएगा। अन्त्य प्रणालियों (पूर्तिकर्ता एवं ग्राहक कम्प्यूटर) को प्रयोज्य पहुंच लिंको द्वारा कार्य केन्द्रों से जोड़ा जाएगा। पहुंच लिंकों के लिए यू टी पी निर्मित केबलिंग पसन्द की वायरिंग है।

स्थानीय क्षेत्र नेटवर्क अक्टूबर, 1998 के अन्त तक कार्य करना शुरू कर देगा।

आदेशित पुस्तकों की सूची

	हार्डवेयर	*सॉफ्टवेयर*
1.	दो 64 बाइट आर आई एस सी आधारित सर्वर	यूनिक्स
2.	तीन पेन्टियम क्लास मशीन	विन्डोज एन टी 4.0
3.	एक 32 बाइट आर आई एस सी	टी सी पी/आई पी नेटवर्किंग सर्वर्स और डेस्कटॉप पब्लिशिंग पैकेज नेटस्केप नेविगेशन गोल्ड वेन पब्लिशिंग एच०टी०एम०एल० में अभिलेख आयात और निर्यात पोस्टस्क्रिप्ट, एडोब एक्रोबेट जे पी ई जी, जी आई एफ एवं डी वी आई फार्मेट्स

(क) विद्यमान व्यापक क्षेत्र नेटवर्क (वान) लिंक

वर्तमान वान लिंक नेशनल इनफॉरेमेटिक्स सेन्टर (निकनेट) द्वारा उपलब्ध कराया जाता है, यह एक वी सैट आधारित समाधाान है। व्यापक क्षेत्र नेटवर्क में सूचना और डाटा बेस के लिए तीव्र पहुंच के लक्ष्य को पूरा करने हेतु यह पूरी तरह से अपर्याप्त है। वान लिंक के बैंड की चौड़ाई 1200 pbs है जो अत्यधिक धीमी है। दूरवर्ती डाटाबेसों में पहुंच बहुत धीमी है। इसलिए, अनुसंधानकर्ताओं, जिन्हें इस तरह की सेवाओं की आवश्यकता होती है, के बड़े समूह में तीव्र पहुंच उपलब्ध नहीं कराई जा सकती है।

इसी तरह के वान लिंक भा०वा०अ०शि०प० के अन्य संस्थानों (वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रवर्धन संस्थान, कोयम्बटूर; काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बंगलौर; हिमालयन वन अनुसंधाान संस्थान, शिमला; उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधाान संस्थान, जबलपुर और शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर) में उपलब्ध हैं। वान में मुख्य सेवाओं में एक भा०वा०अ०शि०प० के सभी संस्थानों से देहरादून में दूरवर्ती डाटाबेस तक पहुंच होगी। रांची, इलाहाबाद और जोरहाट स्थित संस्थानों/केन्द्र में डायल अप मोडम आधारित पहुंच है।

विद्यमान वी सैट आधारित वान लिंक के साथ समस्या इसकी गति और विश्वसनीयता है।

इन्टरनेट पहुंच शेल एकाउन्ट से है।

(ख) व्यापक क्षेत्र नेटवर्क (वान)

भारतीय वानिकी अनुसंधाान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून में 128 kbps बैंड की चौड़ाई के साथ एक वी एस एन एल लीज्ड लिंक लगाने की योजना है। हमें एक क्लास- सी एड्रेस भी प्राप्त होगा। लगभग सभी सर्वर, जो

स्थानीय क्षेत्र नेटवर्क के तहत प्रस्तावित हैं, इन्टरनेट दृश्य होंगे तथा सीधे टेलनेट द्वारा पहुंचा जा सकेगा। सुरक्षा के लिए फायरवाल सॉफ्टवेयर स्थापित किए जायगें जिसके द्वारा इन सर्वर तक पंहुच को नियंत्रित किया जा सकता है; केवल भा.वा.अ.शि.प. द्वारा प्राधिकृत प्रयोक्ता ही इन सर्वरों पर डाटाबेस को लाग और एक्सस कर सकते हैं। इन सर्वर में एक इन्टरनेट सर्वर के रूप में आकृति बनाएगा।

64 kbps बैंड की चौड़ाई के साथ एक आई पी सुविधा वाला वी सैट भा०वा०अ०शि०प०, देहरादून के लिए पहले ही मंगाया जा चुका है और इसे शीघ्र ही नए भवन में स्थापित कर दिया जाएगा।

इसी तरह भा०वा०अ०शि०प० के चार संस्थानों यथा उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान, काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रवर्धन संस्थान और शुष्क वन अनुसंधान संस्थान में स्थानीय क्षेत्र नेटवर्क (लान) लगाने की योजना है। आधारभूत रूपरेखा वही होगी किन्तु प्रत्येक संस्थान में केवल एक सर्वर लगाने की योजना है। संस्थानों में स्थित लान से अनुसंधानकर्ताओं को अपने डेस्कटॉप पर सूचना की आसान पहुंच उपलब्ध रहेगी। वी सैट द्वारा एक बार जुड़ जाने पर सभी संस्थानों के स्थानीय क्षेत्र नेटवर्क भा.वा.अ.शि.प. इन्टरनेट हेतु सेवायें विकसित करने के लिए हमें गुंजाइश देंगे।

सॉफ्टवेयर उन्नयन

एस सी ओ यूनिक्स पर वर्तमान में चल रहे पुस्तकालय स्वचलन पैकेज लिबसेज को ग्राहक सर्वर संरचना में उन्नत किया जाता है। सर्वर एस सी ओ यूनिक्स पर तभी चलेगा जब ग्राहक विन्डोज (जी यू आई) वातावरण में होगा। यह उपयोगकर्ताओं को एक सुस्पष्ट प्रयोक्ता अन्तरापृष्ठ उपलब्ध कराएगा।

कर्मचारियों को प्रशिक्षण

पुस्तकालय और सूचना विज्ञान पर 21 जुलाई, 1997 से 25 जुलाई, 1997 तक अल्प कालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् के विभिन्न संस्थानों के 8 सहभागियों को सी डी - रोम खोज की जटिलताओं, सी डी से अधोगामीभारण (डाउनलोडिंग) सन्दर्भों के लिए तकनीकों के प्रदर्शन तथा अभ्यास सत्र का आयोजन किया गया।

प्रशिक्षण

पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान से सम्बन्धित सूचना प्रौद्योगिकियों में नवीनतम रूझानों का स्तर बनाए रखने के लिए विश्व बैंक की वानिकी अनुसंधान, शिक्षा और विस्तार परियोजनान्तर्गत अन्तर्राष्ट्रीय प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया। इसके अलावा, भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् संस्थानों एवं राष्ट्रीय वन पुस्तकालय एवं सूचना केन्द्र के पुस्तकालय कर्मचारियों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर इसी तरह के प्रशिक्षण का आयोजन किया गया।

(क) अन्तर्राष्ट्रीय

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् के विभिन्न संस्थानों से पांच सहभागियों को पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में 17 मार्च, 97 से 17 जून, 97 तक सी.ए.बी.आई, यू०के० में प्रशिक्षित किया गया।

(ख) राष्ट्रीय

विभिन्न भा.वा.अ.शि.प. संस्थानों के छः सहभागियों को पुस्तकालय एवं सूचना कार्यकलापों में कंप्यूटर अनुप्रयोग में 5 जनवरी से 6 फरवरी, 1998 तक इन्सडॉक, नई दिल्ली में प्रशिक्षित किया गया।

प्रलेख-पोषण

सामान्य कार्यकलाप

पारंम्परिक तथा गैर - पारंम्परिक साहित्य की श्रेणी के तहत प्राप्त हजार से अधिक प्रलेखों के लिए श्रेणीकरण का काम पूरा किया गया। सामग्री के लिए 2300 कार्ड और 2000 सन्दर्भ शीटें तैयार की गई और 24 नयी प्रजातियों की फाइलें खोली गई। 500 से अधिक अभिलेखों को संक्षिप्तीकृत, सूचीकृत और कम्पूटरीकृत किया गया। सरकारी विभागों, विश्वविद्यालयों, गैर - सरकारी संगठनों, संस्थानों तथा व्यक्तियों द्वारा पूछे गए लगभग छः दर्जन प्रश्नों एवं प्रश्नावलियों का उत्तर भी प्रलेख पोषण अनुभाग द्वारा दिया गया।

इलेक्ट्रॉनिक वानिकी सारग्रन्थ

राष्ट्रीय वन पुस्तकालय एवं सूचना केन्द्र को स्वयं पर इस बात का गर्व है कि वह अर्न्तराष्ट्रीय कृषि एवं जैव विज्ञान केन्द्र (सी ए बी आई), यू०के० द्वारा प्रकाशित किए जा रहे कम्पेन्डियम में सहयोग करने वालों में एक है। चित्रों सहित 13 महत्वपूर्ण वृक्ष प्रजातियों पर सूचनाएं उपलब्ध कराई गई जिसके लिए सी.ए.बी.आई. लगभग 2500 अमरीकी डालर का भुगतान करेगी।

वानिकी पर पर्यावरण विज्ञान सूचना तंत्र (इनविस) केन्द्र

पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, दिल्ली के संरक्षण में पर्यावरणीय विज्ञान सूचना तंत्र (इनविस) के भा.वा.अ.शि.प., देहरादून में स्थित राष्ट्रीय वन पुस्तकालय एवं सूचना केन्द्र को वानिकी के लिए केन्द्र के रूप में चुना गया है। राष्ट्रीय वन पुस्तकालय एवं सूचना केन्द्र भारत में वानिकी सूचना की प्राप्ति और प्रसार दोनों के लिए नोडल अथवा केन्द्रीय बिन्दु होगा। निमंत्रण पत्रों के व्यापक परिचालन के साथ ही इनविस न्यूजलेटर में प्रकाशन के लिए भा.वा.अ.शि.प. के अधिकारियों तथा देहरादून स्थित सरकारी विभागों से वानिकी तथा सम्बद्ध विषयों पर अनेक लेख प्राप्त हो रहे हैं।

ग्रे साहित्य

विश्व बैंक के तत्वावधान में प्रलेख-पोषण अनुभाग ग्रे साहित्य खोज पर एक महत्वाकांक्षी परियोजना पर कार्य कर रहा है। इस परियोजना में, भारतीय संघ के सभी राज्यों में ग्रे साहित्य परामर्शदाता वन विभागों, विश्वविद्यालयों, गैर .- सरकारी संगठनों, जिला समितियों तथा अन्य स्थानों से वानिकी से सम्बन्धित विषयों पर गैर - पारंम्परिक साहित्य को एकत्रित करके तकनीकी प्रक्रमण के लिए राष्ट्रीय वन पुस्तकालय एवं सूचना केन्द्र को भेजेगें।

ग्रे साहित्य की श्रेणी के तहत इस अनुभाग को 500 से अधिक प्रलेख प्राप्त हुए हैं। इन्हें वर्गीकृत, संक्षिप्तीकृत तथा सूचीकृत करके वानिकी व्यावसायिकों के तात्कालिक उपयोग के लिए कंप्यूटर में भरा गया। राज्य परामर्शदाताओं द्वारा जारी कार्य प्रगति पर है।

श्री डी०एन० लोहानी, सेवानिवृत्त प्रधान मुख्य वन संरक्षक, उ०प्र०, जिन्होंने मुख्य परामर्शदाता के रूप में कार्य ग्रहण किया है, भारतीय संघ के राज्यों में राज्य परामर्शदाताओं द्वारा गैर - पारंम्परिक साहित्य के संग्रहण के कार्य का समन्वयन करेगें।